प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 56 - A * NOV 2012 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Nov. 01.mp3	20	⊕			**५ माताऐं व उनकी महिमा ::** १ जन्मदात्री २ जन्मभूमि ३ सुरभी ४ ज्हान्वी ५ वेदमाता - ब्रह्म ज्ञान द्वारा सद्यमुक्ति देती है	
2	Nov. 02.mp3	30	⊕			भगवान राम की नर लीला :: शबरी को **नवधा भक्ति** का उपदेश :: भगवान का **व्यापक/निनि०** + **प्रकट/ससा०** स्वरूप निरूपण	1
3	Nov. 03.mp3	55	⊕	⊕	⊕	**अन्नपूर्णोपनिषद** :: **पाँच प्रकार के भ्रम** :: १ **जीव ईश्वर भेद** २ आत्मा कर्ता भोक्ता है ३ आत्मा और शरीर का संग है ४ जगत परमात्मा का विकार है ५ जगत परमात्मा से भिन्न एवं सत्य है। सत्-चित्-आनंद ही हमारा सत् स्वरूप है शरीर छाया है	विशेष १
4	Nov. 04.mp3	50	⊕	⊕	⊕	ब्रह्मोपनिषद - सृष्टिक्रम, **अन्नपूर्णोपनिषद** :: **पाँच प्रकार के भ्रम** :: १ **जीव ईश्वर भेद**-दृ० बिम्ब-प्रतिबिम्ब २ **आत्मा कर्ता भोक्ता है**-दृ० जवाकुसुम और स्फटिकमणि, आत्मा अकर्म है ३ आत्मा और शरीर का संग है-दृ० घटाकाश-महाकाश ४ जगत परमात्मा का विकार है-दृ० रज्जु-सर्प ५ जगत परमात्मा से भिन्न एवं सत्य है-दृ० स्वर्ण-आभूषण	विशेष २
5	Nov. 05.mp3	31	⊕			भगवान राम की नर लीला :: शबरी को **नवधा भक्ति** का उपदेश :: भगवान का **व्यापक/निनि०**+ **प्रकट/ससा०**स्वरूप निरूपण	2
6	Nov. 06.mp3	46	⊕	⊕	⊕	ब्रह्मोपनिषद - सृष्टिक्रम, **अन्नपूर्णोपनिषद** :: **पाँच प्रकार के भ्रम** :: १ **भेद भ्रान्ति**-दृ०बिम्ब प्रतिबिम्ब २ **कर्तृत्व भोक्तृत्व भ्रान्ति** -दृ०स्फटिक-लोहित दर्शनेन, सभी कर्म प्रकृति में हैं आत्मा अकर्म है ३ **संग भ्रान्ति**-दृ०घटाकाश महाकाश ४ **जगत परमात्मा का विकार भ्रान्ति**-दृ०रज्जु सर्प ५ **कारण रूप परमात्मा से जगत भिन्न एवं सत्य भ्रान्ति**-दृ०स्वर्ण आभूषण (**सम्पूर्ण**)	विशेष ३
7	Nov. 07.mp3	28	⊕	⊕		भगवान राम की नर लीला :: शबरी को **नवधा भक्ति** का उपदेश :: **प्रथम** से **सप्तम** भक्ति की विवेचना :: निरूपाधिक मैं **द्रष्टा** रूप से **एक** हूँ व माया उपाधि से **दृश्य** रूप से मैं ही अनेक यानि **'विश्व विराट'** हूँ ।	3
8	Nov. 08.mp3	55	⊕	⊕	⊕	गुरु के 'ब्रह्मा-विष्णु-महेश' सम्बोधन का लक्ष्यार्थ, **सरस्वती रहस्योपनिषद** :: संसार में **५ अंश** हैं - '१अस्ति २भाति ३प्रिय ४नाम ५रूप', पहले तीन अंश **'अस्ति भाति प्रिय'** ब्रह्म का स्वरूप हैं जिनका अर्थ क्रमशः **'सत् चित् आनंद'** है तथा **'नाम रूप'** संसार माया का स्वरूप है। नाम से ही संसार का ज्ञान होता है एवं रूप का ज्ञान नाम के आधीन है। सभी नाम-रूप में 'अस्ति भाति प्रिय' समाया हुआ है जो अविनाशी ब्रह्म तत्त्व का स्वरूप है । इसके अतिरिक्त अन्य किसी का अस्तित्व नहीं है ।	मुख्य एवं विशेष
9	Nov. 09.mp3	29	⊕			भगवान राम की नर लीला :: शबरी को **नवधा भक्ति** का उपदेश :: भक्त शिरोमणि मीरा का प्रसंग	4
10	Nov. 10.mp3	50	⊕			**गीताजी की महिमा, ५ माताओं** का वर्णन एवं महिमा, **माँ प्रथम गुरु** - 'कर्म भक्ति ज्ञान' उपदेश दायिनी	
11	Nov.11.mp3	31	⊕			भगवान राम की नर लीला :: शबरी को **नवधा भक्ति** का उपदेश :: **आठँव+नवम्** भक्ति निरू० एवं भक्ति का फल-स्वरूप ज्ञान	5
12	Nov.12.mp3	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचन अनुपलब्ध	NA
13	Nov.13.mp3	46	⊕			**गीतामहात्म्य,** गीतामृत के अधिकारी कौन हैं, **अज्ञान रूपी रोग की 'ज्ञान' ही औषधि है,** हमारा स्वरूप देह नहीं सच्चि० आत्मा है	
14	Nov.14.mp3	28	⊕	⊕	⊕	भ०के ज्ञान हेतु दो प्रकार के वाक्य हैं :: **परोक्ष ज्ञान** हेतु **अवान्तर वाक्य** :-१ स्वरूप लक्षण-सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म २ तटस्थ या उपलक्षण - एक देशीय, कदाचित, व्यावर्तक :: **अपरोक्ष ज्ञान** हेतु **महावाक्य** - तत्त्वमसि, अहं आत्मा ब्रह्म-सो अयं आत्मा	विशेष
15	Nov.15.mp3	52	⊕			**भग० जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं** - दृ०मकड़ी, औषधि, केश, लोम। त्रैगुण्य सृष्टि व ४ वर्णाश्रमों के कर्म/धर्म निरूपण	
16	Nov.16.mp3	33	⊕			'ईश्वरकृपा-वेदकृपा-गुरुकृपा-आत्मकृपा' - **चार कृपाओं** के संयोग से ही मनुष्य को **ब्रह्मज्ञान** हो जाता है ।	1
17	Nov.17.mp3	48	⊕	⊕	⊕	'ईश्वर-वेद-गुरु-आत्म' **चार कृपाओं** के संयोग से ही मनुष्य को **आत्मज्ञान** द्वारा **'पवर्ग'** अथवा **'मोक्ष'** सम्भव है । अज्ञान के नाश होते ही भगवान के दर्शन होने लगते हैं । भगवान ही जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं। द्रष्टा देव है, दृश्य माया है ।	2
18	Nov.18.mp3	32	⊕	⊕	⊕	**राम-लक्ष्मण सम्वाद ::** हे प्रभो ! **ज्ञान वैराग्य** और **माया** क्या है? **भक्ति** का क्या स्वरूप है जिसके कारण आप भक्त के वश में हो जाते हैं? **ईश्वर** और **जीव** का स्वरूप भी मुझे समझाकर बतायें जिससे शोक मोह और भ्रम का नाश हो ।	Imp 2
19	Nov.19.mp3	42	⊕	⊕	⊕	**गीता -४/१७-१८ :** कर्म की गति गहन है अतः **कर्म-विकर्म-अकर्म** को जानना चाहिये, वेद त्रिकाण्डमय हैं, **कर्मकाण्ड :-** वर्णाश्रम पदाधिकारानुसार किये जाने वाले 'वेदविहित' कर्म ही **कर्म** हैं इनके २ प्रकार हैं-**१ विशेष २ सामान्य,**वेद विरुद्ध कम **विकर्म** हैं, कर्म-विकर्म के आधार अधिष्ठान को **अकर्म** कहते हैं, सारे कर्म आत्मारूपी अधिष्ठान में भासित प्रकृति में होते है	
20	Nov.20.mp3	31	⊕	⊕	⊕	'ईश्वर-वेद-गुरु-आत्म' **चार कृपाऐं ::** विषय सुख प्रतीति मात्र हैं इनसे वैराग्यवान होकर कर्मों से अप्राप्य परमसुख स्वरूप 'ब्रह्म ज्ञान' हेतु चतुष्ट साधन सम्पन्न होकर गुरु की शरण में जाय फिर श्रुति के अनुसार सत्-असत् विवेक करे -**'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या'** - अपनी आत्मा / अपना स्वरूप द्रष्टा साक्षी ब्रह्म है जो सदा रहता है इसमें ये जगत आता जाता रहता है, ऐसा जाने	3
21	Nov.21.mp3	43	⊕	⊕		वेदों का सार गीताजी की महिमा - सुधीर भोक्ता अर्जुन गीता ज्ञानामृत का उपदेश, हमारा ज्ञान ही हमारा वास्तविक स्वरूप है यह जानना ही ज्ञानामृत पीकर अमर होना है **कर्म-विकर्म-अकर्म** का स्वरूप निरूपण, **'वेदविहित'** कर्म ही **धर्म** है, **कर्म-विकर्म विभाग**	
22	Nov.22.mp3	30	⊕	⊕		ब्रह्म के **तटस्थ** एवं **स्वरूप लक्षण**, ब्रह्म ज्ञान में बाधक ३ प्रतिबन्ध **'मल विक्षेप आवरण'** के निवारण हेतु **त्रिकाण्डमय वेद** है	
23	Nov.23.mp3	49	⊕	⊕		**गीता -४/१७-१८ :** कर्म की गति गहन है अतः **कर्म-विकर्म-अकर्म** को जानना चाहिये, सभी कर्म प्रकृति में है आत्मा **अकर्म** है, वेद-विरुद्ध कर्म **विकर्म** तथा वेद-विहित कर्म ही **कर्म** हैं- **१ विशेष २ सामान्य** - अहिंसा सत्य अस्तेय अपरिग्रह गुरुसेवा शौच संतोष	
24	Nov.24.mp3	46	⊕	⊕	⊕	आनंद रामायण-मनोहर काण्ड:: **'श्री राम जय राम जय जय राम'** महामंत्र की **व्याख्या** एवं **महिमा**, सीताराम जगत के मातापिता हैं	Imp
25	Nov.25.mp3	46	⊕	⊕	⊕	**गीता -१३/१-२ :** हे अर्जुन **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ २** ही पदार्थ हैं, सभी शरीर **क्षेत्र** हैं जो खेत के समान जड़ हैं इन्ह क्षेत्रों को ज्ञान नहीं है, सभी शरीरों में बैठ कर देखने वाला **क्षेत्रज्ञ** तू मुझे ही जान, सभी शरीर रूपी क्षेत्रों में **'मैं'** नामक तत्त्व भगवान ही देखने वाले हैं, हमारी तुम्हारी आत्मा ही भगवान है उसे प्राप्त करने पर ही सुख की प्राप्ति होती है ।	
26	Nov.26.mp3	26	⊕			ब्रह्मोपनिषद :: ब्रह्म से छाया की तरह माया का प्रदुर्भाव हुआ जिससे महत् तत्त्व, से अहं तत्त्व से पंचतन्मात्रा से अखिल जगत	
27	Nov.27.mp3	50	⊕	⊕	⊕	सभी वेदों का सार उपनिषद व उपनिषदों का सार गीताजी हैं जिनका पान शुद्ध हृदय वाला ही कर सकता है, अपने स्वरूप को न जानने के कारण जीव शरीर में अहंता व सम्बन्धियों में ममता कर सुखी दुःखी होता है, ईश्वर की शरण में जाने पर भ० उसे आत्मज्ञान देकर उसका मोह नष्ट कर देते है, सब जड़ नाशवान देह मायाकृत हैं उन सबके भीतर मैं सच्चि०द्रष्टा साक्षी आत्मा हूँ	विशेष
28	Nov.28.mp3	32	⊕			**दो ब्रह्म** जानने योग्य हैं १ **शब्द ब्रह्म**- ब्रह्माजी को वेद का उपदेश, २ **परम् ब्रह्म** । ब्रह्मोपनिषद :: सृष्टि क्रम	
29	Nov.29.mp3	56	⊕			भगवान नारायण ने ब्रह्मज्ञान सर्वप्रथम ब्रह्मा को दिया, **'ब्रह्म ज्ञान परम्परा'**, भ०शंकर द्वारा माँ पार्वती को कही गयी **'अमर कथा'**	
30	Nov.30.mp3	30	⊕			सृष्टि के आदि में केवल परमात्मा या हमारी तुम्हारी आत्मा ही था जिससे सर्वप्रथम आकाश उत्पन्न हुआ फिर-वायु-अग्नि-जल -पृथ्वी-अन्न से सभी भूत प्राणी उत्पन्न हुए, वे अन्नरूप पृथ्वी में रहते व लीन हो जाते हैं, अंत में आत्मा ही शेष रह जाता है	
31	Nov.31.mp3	38	⊕	⊕	⊕	**गीता -२/१२-१६ :** अर्जुन हम सच्चिदानंद स्वरूप नित्य द्रष्टा साक्षी आत्मा हैं किन्तु ये देह छाया-माया रूप है जो आने जाने वाले हैं सुख-दुःख भूख-प्यास आत्मा ग्राह्य हैं इन्द्रियों से केवल शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ५ विषयों का ही ज्ञान होता है, हमारा आत्मा सत् है जो सदा रहता है, ये जड़ अज्ञान रूप देह ही विकारी एवं जन्मते मरते हैं, अतः अपने को माया से अलग जानो	विशेष

32	Nov.32.mp3	27		'हंसा हंसा' अजपा गायत्री मंत्र		हमारा तुम्हारा वास्तविक स्वरूप सच्चिदानंद ब्रह्म है, हे जीव **'मैं' तत्त्व ब्रह्म ही है** । ४रों वेद के महावाक्य जीव को ब्रह्म ही बताते हैं । **'अजपा'** नाम की गायत्री मुक्ति देने वाली है बिना जपे इसका जाप होता रहता है :: **'अहं सः-सो अहं'** यानि **'मैं वह हूँ-वह मैं हूँ'** । तुम स्वभाव से ही ज्ञान ज्योति स्वरूप हो, **तुम्हारा स्वरूप 'सत्' है** तुम 'असत् जड़ दुःखरूप मायाकृत देह नहीं हो	अति विशेष
33	Nov.33.mp3	43				**गीता -२/१६ : सत् और असत् दो ही पदार्थ हैं** तीसरा कुछ नहीं है **सत्** सदा रहता है व **असत** का कभी भाव नहीं है, अर्जुन हमारा तुम्हारा द्रष्टा साक्षी आत्मा सत् है किन्तु ये संसार दिखाई तो पड़ता है किन्तु सदा नहीं रहता, ये असत् है ।	१
34	Nov.34.mp3	32		इनों शरीरों की रचना		सृष्टि के आदि में केवल परमात्मा या हमारी तुम्हारी आत्मा ही था जिससे सर्वप्रथम आकाश उत्पन्न हुआ फिर-वायु-अग्नि-जल -पृथ्वी-अन्न से सभी भूत प्राणी उत्पन्न हुए, वे अन्नरूप पृथ्वी में रहते व लीन हो जाते हैं, अंत में आत्मा ही शेष रह जाता है,	
35	Nov.35.mp3	50		३ शरीर, ५ कोष रचना		**गीता -२/१६ :** अर्जुन **२ तत्त्व हैं सत्** और **असत्,** जो सदा रहे उसे सत् व जो सदा नहीं रहे उसे असत् कहते हैं । हमारी आत्मा सत् है तथा दृश्यान जगत असत् हैं । द्रष्टा दृश्य से भिन्न होता है । हमारा स्वरूप जा०स्व०सु०का द्रष्टा ४था **तुरीय** है ।	विशेष २
36	Nov.36.mp3	33				**५ मातायें व उनकी महिमा ::** १जन्मदात्री २ जन्मभूमि ३ सुरभी ४ ज्हान्वी ५ वेदमाता-ब्रह्म ज्ञान द्वारा सद्यमुक्ति देती है	
37	Nov.37.mp3	55		दुईला का देहबुद्धित्याग का उपदेश		**गीता -२/१६ :** अर्जुन **२ तत्त्व हैं सत्** और **असत्,** जो सदा रहे उसे सत् व जो दिखाई दे पर सदा नहीं रहे उसे असत् कहते हैं । हमारी आत्मा सत् है तथा दृश्यमान जगत असत् हैं । मैं सब देहों के भीतर हूँ व सबको देखता हूँ मैं बोध स्वरूप हूँ। हम जा०स्व०सु० को व उसके अभाव को भी देखते हैं किन्तु हमारा कभी अभाव नहीं होता, जगत माया है जो कभी नहीं है	विशेष ३
38	Nov.38.mp3	32				**५ मातायें व उनकी महिमा ::** १जन्मदात्री २ जन्मभूमि ३ सुरभी ४ ज्हान्वी ५ वेदमाता-ब्रह्म ज्ञान द्वारा सद्यमुक्ति देती है	
39	Nov.39.mp3	45				**गीता -२/१६-२३ :** अर्जुन **२ तत्त्व हैं सत्** और **असत्,** जो सदा रहे उसे सत् व जो दिखाई दे पर सदा नहीं रहे उसे असत् कहते हैं । हमारी आत्मा सत् है तथा दृश्यमान जगत असत् हैं ।जा०स्व०सु०तीनों आने जाने वाले माया मात्र हैं, ४था हमारा आत्मा द्रष्टा साक्षी अविनाशी सनातन अकर्म अचल अप्रमेय है । इसका नाश करने में कोई भी समर्थ नहीं है ।	विशेष ४
40	Nov.40.mp3	27				**५ मातायें व उनकी महिमा ::** १जन्मदात्री २ जन्मभूमि ३ सुरभी ४ ज्हान्वी ५ वेदमाता-ब्रह्म ज्ञान द्वारा सद्यमुक्ति देती है	
41	Nov.41.mp3	37				**गीता -२/२३-२७ :** हमारा तुम्हारा आत्मा आकाश से भी सूक्ष्म एवं व्यापक है, आत्मा अछेद्य अशोष्य अक्लेद्य अदाह्य नित्य सर्व गत शास्वत अचल सनातन अव्यक्त निनि० अचिन्त्य एवं निर्विकार है, अर्जुन अपनी आत्मा का ऐसा वास्तविक स्वरूप जानकर शोक नहीं करना चाहिये, ईश्वर का अंश होने से जीव का स्वरूप भी सच्चिदानंद है आत्मा का जन्म-मरण नहीं होता ।	विशेष ५
42	Nov.42.mp3	27				भ०के ज्ञान का साधन त्रिव्वेद-**'कर्म उपासना ज्ञान'** हैं, वर्णाश्रम के अनुसार वेद विहित कर्म ही धर्म हैं, वर्णाश्रम का धर्म निरूपण	
43	Nov.43.mp3	45				**गीता -२/२७-२६ :** जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु ध्रुव है, हमारा तुम्हारा वास्तविक स्वरूप सच्चि०है जो स्वभाव से ही नित्य परम सत्य उत्पत्ति नाश रहित है, शरीरों का समूह ये जगत बिना सामग्री के उत्पन्न हुआ है अतः मिथ्या है, ये नाशवान है। **गनी** दुईला का कुम्भज ऋषि के रूप में उपदेश-**सर्वत्याग में कल्याण है,** 'मैं' देहाभिमान का त्याग करो, **तुम्हारा स्वरूप सच्चि० आत्मा** है	विशेष ६
44	Nov.44.mp3	32				सृष्टि के आदि में एक सच्चि०ब्रह्म ही था उससे सर्वप्रथम ओंकार उत्पन्न हुआ, ओंकार के ४रूप = परा, पश्यन्ति, मध्यमा, बैखरी, ओंकार से स्वर-व्यंजन व नाम-रूप उत्पत्ति, ओंमू भ० का सर्वश्रेष्ठ नाम है जो **'इदं'** से **प्रणव** व **'तद्'** से **ब्रह्म** को बताता है	
45	Nov. 45.mp3	40				**गीता -२/३० : देह देही २ ही तत्त्व हैं,** दिखाई देने वाला देह व उनके भीतर बैठ कर देखने वाला देही है जो नित्य सत्य अवध्य है, वह स्वयं भगवान नारायन परमात्मा है, ये देह जड़ एवं नाशवान है, देखने वाला देव अमृत है देवालय जन्मते मरते हैं	विशेष ७
46	Nov. 46.mp3	27			१	**कृष्णयजुर्वेद मुक्तिकोपनिषद ::** हनुमानजी नेभ०राम से भ०के निनि०स्वरूप को जानने का उपाय पूछा उस पर भगवान ने कहा कि मेरे निनि० सच्चि० स्वरूप का वर्णन **वेदान्त** में कहा गया है वेद मेरे निःस्वास स्वरूप हैं अतः तुम वेदान्त का आश्रय लो, **मा०उ०**	
47	Nov. 47.mp3	35				**गीता -१३/१-२ : क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ २ तत्त्व हैं,** ये शरीर क्षेत्र है व इन्हें जानने वाला क्षेत्रज्ञ है, देह को जानने वाला जीवात्मा है वह जीवात्मा ही हमारा स्वरूप है शरीर नहीं । जीवात्मा के रूप में एक मैं परमात्मा ही सब देहों में बैठ कर देख रहा हूँ	
48	Nov. 48.mp3	47		विशेष कैप्सूल		**गीता -१३/१-२ : क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ २ तत्त्व हैं** ये शरीर **क्षेत्र** हैं जिन्हें ज्ञान नहीं है व इनके भीतर रहने वाला जीवात्मा ज्ञानवान **क्षेत्रज्ञ**है । अर्जुन तू क्षेत्रज्ञ मुझे ही जान । २५ तत्त्व के स्थूल, १६ तत्त्व के सूक्ष्म एवं स्वरूप अज्ञानरूप 'कारणशरीर' जीव के इनों देहों को ज्ञान नहीं है इन्हें जानने वाला जीवात्मा ही है । ३ देह, ३ अवस्थाऐं, ५ कोष - सब माया मात्र हैं, इनके भाव अभाव को देखने वाले हम आत्मा हैं । **'मैं'** जड़ देह नहीं हूँ अपितु चेतन व्यापक **जीवात्मा हूँ यही यथार्थ ज्ञान है**	
49	Nov. 49.mp3	28			२	अथर्ववेदीय **संपूर्ण माण्डूक्य उपनिषद** - संक्षेप में :: ओंकार का स्वरूप एवं इसके ४रों पादों का निरूपण	
50	Nov. 50.mp3	48				**गीता -४/१७-१८ :** कर्म की गति गहन है अतः **कर्म-विकर्म-अकर्म** को जानना चाहिये, सभी कर्म प्रकृति में है आत्मा **अकर्म** है, वेद-विरुद्ध कर्म **विकर्म** तथा वेद-विहित कर्म ही **कर्म** हैं-**१ विशेष २ सामान्य**-अहिंसा सत्य अस्तेय अपरिग्रह गुरुसेवा शौच संतोष	
51	Nov. 51.mp3	32				सीताजी द्वारा भगवान **राम कानिनि०सच्चि०स्वरूप निरूपण** :: *'रामं विद्धि परम् ब्रह्मं सच्चिदानन्दं अद्वयं'*:: भगवान का यशोदा मॉ, कौशल्या अम्बा एवं अर्जुन को विश्व-विराटरूप दर्शन	१
52	Nov. 52.mp3	43				**गीता -४/१७-१८ :** कर्म की गति गहन है अतः **कर्म-विकर्म-अकर्म** को जानना चाहिये, सभी कर्म आत्मा रूपी अधिष्ठान में अध्यस्थ प्रकृति में ही है आत्मा द्रष्टा साक्षी अचल असंग और **अकर्म** है, वेद-विरुद्ध कर्म **विकर्म** तथा वेदविहित कर्म ही **कर्म** हैं-**१ विशेष २ सामान्य ::** अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह अक्रोध गुरुसेवा शौच संतोष आर्जवम् अमानित्वं अदम्भित्वम्	विशेष
53	Nov. 53.mp3	28				हनुमानजी को सीताजी द्वारा भगवान **राम का निनि० सच्चि० स्वरूप निरूपण** :: *'रामं विद्धि परम् ब्रह्मं सच्चिदानन्दं अद्वयं'*:: ब्रह्म माया ईश्वर जीव का स्वरूप निरूपण तथा जीव और ईश्वर का एकत्व दर्शन	२
54	Nov. 54.mp3	38				**गीता -१५/१६-२०:**इस लोक में **क्षर-अक्षर** २ पुरुष हैं, क्षण क्षण में विनाश होने वाले **क्षर** हैं और जिससे यह प्राणी उत्पन्न होते हैं वह कपट रूप से स्थित रहने वाली यानि सत् को ढॉक कर असत् को दिखाने वाली **'प्रकृति'** कार्य की अपेक्षा से **अक्षर** है । जा०स्व०सु० माया मात्र है । इनको देखने वाला ४था **परमअक्षर** तो ब्रह्म है जो हमारा स्वरूप है, ये अविनाशी **उत्तम पुरुषब्रह्म** जगत का आधार अधिष्ठान है । हम शरीर नहीं आत्मा हैं । भगवान की इच्छा-शक्ति **'प्रकृति'** से सभी शरीर बन जाते हैं जो क्षर हैं । अपने आत्मस्वरूप को जानने के पश्चात कुछ भी करना अथवा जानना शेष नहीं रहता ।	विशेष
55	Nov. 55.mp3	20				हनुमानजी को सीताजी द्वारा भगवान **राम का निनि० सच्चि० स्वरूप निरूपण** :: *'रामं विद्धि परम् ब्रह्मं सच्चिदानन्दं अद्वयं'*:: :: :: "अधूरी रिकॉर्डिंग"	३